राम चमकते भानु समाना

PROSPECTUS

संघ समर्पणा महोत्सव 2022

संघ विवरणिका

- सेवा के 60 वर्ष
- 30 से ज्यादा शैक्षणिक, आध्यात्मिक, धार्मिक, सामाजिक एवं परोपकारी प्रकल्प संचालित

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

केन्द्रीय कार्यालय : 'समता भवन' आचार्य श्री नानेश मार्ग, गंगाशहर, नोखा रोड, बीकानेर-334401 (राज.)
E-mail: ho@sadhumargi.com, Visit us: www.sadhumargi.com sadhumargi

परिप्रेक्ष्य

भगवान महावीर परम्परा के पंचम गणधर आचार्य सुधर्मा स्वामी के 74वें पाट पर महान तपोधनी,, क्रियोद्धारक आचार्य श्री हुक्मीचंद जी म.सा. विराजमान हुए थे। उसी समय श्री संघ का संयमी बीजारोपण हुआ। पूज्य श्री हुक्मीचन्द जी म.सा. की सम्प्रदाय का **''हितेच्छु श्रावक मण्डल''** अब श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ की स्थापना संवत् 1978 के आश्विन कृष्णा 11 को शहर रतलाम में श्रीमद् जैनाचार्य पूज्य श्री 1008 श्री जवाहरलाल जी म.सा. के चातुमार्स में हुआ। आपश्री की पाट परम्परा के समस्त आचार्यगण अपने तप–त्याग व साधना से इस संघ को सींचते व संवारते रहे।

कालांतर में आसोज सुदी 2 वि.सं. 2019 (30 सितम्बर 1962) के पावन दिवस पर उदयपुर में उपरोक्त मण्डल का पुन: नामकरण करते हुए उसे **''श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ''** की संज्ञा दी।

ठीक उसी दिन श्रीमद् गणेशाचार्य श्री ने युवाचार्य श्री नानालाल जी म.सा. को चादर प्रदान की गई। लगभग तीस हजार श्रावक–श्राविकाएं भी भव्य उपस्थिति में यह कार्यक्रम संपन्न हुआ था।

विगत 60 वर्षों में पूर्वाचार्यों की परम्परा के अनुरूप आचार्य श्री नानेश तथा वर्तमान आचार्य श्री रामेश की नेश्राय में संघ सम्यक् ज्ञान दर्शन चारित्र की आराधना व समाजोत्थान व राष्टीय उत्कर्ष हेतु कार्यरत है। आचार्य श्री हुक्मीचंदजी म.सा. द्वारा बोया हुआ बीज, अंकुरित पल्लवित होते हुए एक वटवृक्ष के समान आज विद्यमान है जिसकी जड़ों में दिव्य आचार्यों का, बलिदान, सेवा, निष्ठा निहित है।

- वर्तमान में 82वें पाट पर विराजमान विद्यमान नवम् आचार्य श्री रामलालजी म.सा. अपने आचार के पावित्र्य व विचार के गांभीर्य से, अपने नैश्रायरत 452 चारित्रात्माओं की धर्मदेशना से, जिनशासन की अभूतपूर्व प्रभावना कर रहे है।
- समाज की महिला शक्ति को सृजनात्मक कार्यों से जोड़ने हेतु श्री अ.भा.सा.जैन महिला समिति वि.सं. 2023 (सन् 1966) में गठित हुई थी।
- आचार्य प्रवर का अनुपम संदेश समस्त साधुमार्गी परिवारों एवं जन–जन, देश–विदेश तक पहुँचाये एवं देश–विदेश के निवासरत युवा शक्ति की सहभागिता से धार्मिक एवं सामाजिक व विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करते हुए स्व पर कल्याण की साधना के साथ युवाओं को दिशाबोध देने हेतु 4 नवम्बर 1979 को श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ की स्थापना की गई।

साधुमार्गी संप्रदाय के नवम पट्टधर, रत्नत्रय के महान आराधक, परमागम रहस्यज्ञाता, व्यसन मुक्ति के प्रणेता, उत्क्रांति प्रेरक गुणशील सम्प्रेरक श्रीमद् जैनाचार्य 1008 श्री रामलालजी म.सा.

- परम पूज्य श्रीमद् जैनाचार्य 1008 श्री रामलालजी म.सा. का व्यक्तित्व जैन समाज ही नहीं अपितु जैनेतर समाज में भी अपनी निर्मल संयम–साधना व ओजस्वी प्रवचन के लिए महत्वपूर्ण पहचान रखता है।
- अभ्यस्त मूर्तिकार के समान समता विभूति आचार्य श्री नानेश ने स्वयं अपने हाथों से सम्यक् ज्ञान–दर्शन–चारित्र से युक्त इस महान व्यक्तित्व को गढ़कर सुसज्जित किया ।
- सन् 1990 में आगमों संस्कृत और प्राकृत के प्रकाण्ड विद्वान श्री लालचंदजी नाहटा (केकडी) ने आपको, परमागम रहस्य ज्ञाता के विशेषण से अलंकृत किया ।
- **''इंगियागारे सम्पन्ने''** सूक्ति को सार्थक करने वाले उत्कृष्ट क्रियाधारी मुनिप्रवर श्री रामलालजी म.सा. को बीकानेर की पुण्य धरा पर फाल्गुन शुक्ला तीज सन् 1992 के दिन, समता विभूति आचार्य श्री नानेश ने युवाचार्य पद प्रदान किया।
- आचार्य के दायित्वों का निर्वहन करते हुए, परिषह सहते हुए, लोगों को धर्मोपदेश का अमृतपान कराते हुए, आप देश के 17 राज्यों में हजारों किलोमीटर पद विहार कर चुके है। दक्षिण भारत में तिरूचिरापल्ली तक आपने अपने पदचिह्न अंकित किए। दक्षिण व पूर्वांचल में धर्म जागरण का शंखनाद कर आपने इतिहास रचा।
- आचार्य श्री ने जन–जन में आध्यात्मिक जागरण एवं आत्म शुद्धिकरण के लिए समय'–समय पर विभिन्न आयामों के साथ दो नवीन आयाम **आध्यात्मिक आरोग्यम** (9 नवम्बर 2021, वि.सं.2078, कार्तिक सुदी 5 (ज्ञानपंचमी) ब्यावर में) एवं श्रावक हेतु **श्रावक से सुश्रावक** बनने की दिशा में 11 सूत्रीय आयाम (6 जुलाई 2022 को उदयपुर में) प्रदान कर संघ एवं समाज पर महती कृपा की।
- आपके नेश्रायरत **452** चारित्रात्माओं की धर्मदेशना आपके प्रबल धर्मप्रभावना के स्वर्ण पर सुहागा है। आपके कर कमलों से **363** मुमुक्षुओं का जैन भागवती दीक्षा ग्रहण करना भी अध्यात्म प्रभावना का एक कीर्तिमान है।
- इस पंचम आरे में भी, आप अपने जीवन दर्शन से, कठोर संयम साधना से, अपने वैराग्य–प्रधान प्रभावपूर्ण प्रवचन से व्याख्यान स्थल पर ही श्रोताओं को मंत्र–मुग्ध कर दीक्षा का प्रसंग निर्माण कर व दीक्षा ग्रहण करवाकर, चतुर्थ आरे की

पुनरावृत्ति का आभास दिलाते हैं ।

- आपश्री को हिंदी, संस्कृत, प्राकृत भाषाओं का गहरा ज्ञान है। 48 वर्षों से आप संयम मार्ग के पथिक व मार्गदर्शक हैं। आज भी अनेक शिक्षित युवक–युवतियां मुमुक्षु का बाना पहने आपश्री के मुखारविंद से दीक्षा सूत्र सुनने के लिए करबद्ध खड़े हैं। हर श्रावक–श्राविका ज्ञानवान् क्रियावान बने यही आपका प्रयास व आह्वान है।

आचार्य श्री ने अपने सामाजिक चिंतन, उद्‌बोधन एवं प्रेरणा से –

– बावरी समाज को हिंसा के त्याग का संकल्प करवाकर उनके जीवन का उत्थान किया ।

– युवाओं एवं विद्यार्थियों को व्यसनमुक्ति का संकल्प दिलाकर **''रामगुरु का है संदेश, व्यसन मुक्त हो सारा देश''** इस उक्ति को चरितार्थ किया।

– सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन हेतु **'उत्क्रांति'** का प्रादुर्भाव किया ।

– सकल मानव समाज के उत्कर्ष हेतु **'गुणशील'** स्वरूप नैतिकता व सदाचार के प्रचार–प्रसार का शंखनाद किया।

- आपश्री के भक्त प्रेमी अनुयायी भारत देश में ही नहीं अपितु विदेशों में भी अच्छी संख्या में हैं । आपके चातुर्मास में प्रतिवर्ष 300 से 400 गृहस्थ लोच करवाते हैं। लोच का ऐसा आंकडा अन्य चातुर्मास में देखने को नहीं मिलता । आपके चातुर्मास में आश्चर्यजनक अपूर्व तपाराधना का वातावरण देखने को मिलता है।
- हुक्म संघ के इतिहास में प्रथम बार फाल्गुन सुदी 3 वि.सं. 2075 (9 मार्च 2019) को साधुमार्गी स्तम्भ ब्यावर में उत्क्रान्ति प्रदाता **आचार्य प्रवर श्री 1008 श्री रामलाल जी म.सा.** द्वारा नवकार मंत्र के चौथे पद पर श्री राजेशमुनि जी म.सा. को आरुढ़ किया गया। **बहुश्रुत वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनि जी म.सा.** ज्ञानवन में रमण करते रहने के कारण श्रेष्ठतम गुणों के स्वामी हैं। सागर के समान गंभीर हैं। क्रोध, मान आदि के उदय का निग्रह करने में कुशल हैं। श्रीमद् भगवती सूत्र स. 02 उ. 05 के अनुसार आप श्री **कुत्रिकापण'** के समान है। आपश्री आगम ज्ञान प्रेरक एवं स्व–पर सिद्धांत के ज्ञाता एवं श्रुतदान परायण हैं। विशाल ज्ञान होने पर भी लघुता एवं सरलता के कारण आपश्री बहुश्रुत वाचनाचार्य पद को सुशोभित कर रहे हैं।

आपश्री के मार्गदर्शन में भूमिगत बीज से गगनचुंबी वटवृक्ष तक पहुँचने की
संघर्षशील यात्रा करता हुआ **''साधुमार्गी समुदाय''** निरंतर अग्रसर है,
उसी प्रकार श्री संघ भी चहुँमुखी विकास में ज्ञान दर्शन चरित्र एवं तपाराधना में गतिशील है।

राम वसऊते भानु समाना

संघ के प्रशासनिक केन्द्र

- बीकानेर में स्थित केन्द्रीय कार्यालय से संघ के समस्त प्रशासनिक कार्य प्रबंधित होते है। साथ ही संघ की कई महत्वपूर्ण प्रवृत्तियों का संचालन भी इस कार्यालय से होता है।
- उदयपुर स्थित आचार्य श्री नानेश ध्यान केन्द्र से संघ की शैक्षणिक एवं धार्मिक गतिविधियों का संचालन होता है।
- संघ के अन्य कार्यालय दिलीप नगर, रतलाम से प्रबंधित नानेश निकेतन प्रकल्प के अंतर्गत धर्मपाल–सिरीवाल प्रवृत्ति का कार्य होता है। नानेश निकेतन परिसर में विहार सेवा दल ट्रेनिंग सेन्टर का भी संचालन हो रहा है।

आचार्य श्री नानेश ध्यान केन्द्र, उदयपुर

नानेश निकेतन, रतलाम

शैक्षणिक, आध्यात्मिक एवं धार्मिक प्रवृत्तियाँ

- **समता संस्कार पाठशाला :** यह संघ का प्रमुख प्रकल्प (Flagship Project) माना जाता है। सुसंस्कारित बालकवृंद समाजोत्थान की आधारशिला है। बच्चों में संस्कार निर्माण के उद्देश्य से देशभर में विभिन्न केंद्रों पर दैनिक व साप्ताहिक पाठशालाएं संचालित की जा रही हैं। 237 पाठशालाओं में 5160 अध्ययनरत बालक–बालिकाओं के हितार्थ 435 शिक्षिकाएं अपनी सेवाएं प्रदान कर रही हैं। शिक्षार्थियों को जैन तत्वज्ञान से भी परिचित कराया जाता है; वे संघ द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित धार्मिक परीक्षाओं में भी भाग लेते हैं।

समता संस्कार पाठशाला

- **नो एण्ड ग्रो (Know & Grow) :** यह एक अभिनव परियोजना है जिसके अन्तर्गत बच्चों में नैतिक संस्कारों का निर्माण हो वे उन्हें अपनाए और जीवन में उतारे। आधुनिक शिक्षा बच्चों को ज्ञानवान बना सकती है। मगर Know & Grow के माध्यम से धार्मिक निर्माण एवं चारित्र निर्माण से स्वांगीण विकास (Holistic Development) सम्पन्न होता है।

- **समता प्रचार संघ :** इस प्रवृत्ति का उद्भव समता विभूति परम श्रद्धेय स्व. आचार्य प्रवर श्री नानालालजी म.सा. की सद्प्रेरणा से उदयपुर में सन् 1978 में हुआ। प्रवृत्ति का उद्देश्य समता सिद्धान्त को जन-जन तक पहुँचाने का रहा है। स्वाध्यायियों को तैयार करने के लिए समय-समय पर स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन करना, पर्युषण पर्वाराधन के पावन प्रसंग पर अधिकाधिक क्षेत्रों में धर्माराधना कराना इस प्रवृत्ति के मुख्य कार्य हैं। वर्तमान में प्रतिवर्ष लगभग 500 स्वाध्यायी समता प्रचार संघ के माध्यम से लगभग 200 स्थलों पर स्वाध्यायी सेवा देते हैं।

- **धार्मिक परीक्षा बोर्ड :** इसका प्रमुख उद्देश्य मुमुक्षु आत्माओं व चारित्रात्माओं में सम्यक् ज्ञान की अभिवृद्धि करना है। इस परीक्षा में प्रतिवर्ष लगभग 150 मुमुक्षु एवं चारित्रात्माएँ भाग लेती हैं। इसमें जैन सिद्धान्त भूषण, कोविद, विभाकर, मनीषी, विशारद आदि अनेक पाठ्यक्रमों का संचालन किया जाता है।
- **जैन संस्कार पाठ्यक्रम :** बालक-बालिकाओं, युवक-युवतियों एवं श्रावक-श्राविकाओं को जैन धर्म का प्रारम्भिक ज्ञान देते हुए उत्तरोत्तर आगम एवं तत्त्व ज्ञान से परिचित कराने के लक्ष्य से संघ द्वारा जैन संस्कार पाठ्यक्रम परीक्षा का आयोजन विगत कई वर्षों से किया जा रहा है। संघ द्वारा इन परीक्षाओं के आयोजन हेतु जैन संस्कार पाठ्यक्रम पुस्तिकाएं भाग-1 से 12 तक प्रकाशित की जा चुकी हैं । वर्ष 2020-2021 में 298 परीक्षा केन्द्रों पर 4165 परीक्षार्थियों ने भाग लेकर जैन धर्म एवं दर्शन का ज्ञान प्राप्त किया। जैन संस्कार पाठ्यक्रम की पुस्तकें भाग 1-12 हिन्दी में उपलब्ध है। भाग 1-5 गुजराती में भी उपलब्ध है ।
- **समता संस्कार शिविर :** संघ द्वारा बालक-बालिकाओं के चारित्र निर्माण हेतु प्रतिवर्ष सम्पूर्ण देश में क्षेत्रीय एवं स्थानीय समता संस्कार शिविरों का आयोजन किया जाता है। इन शिविरों के माध्यम से बालक-बालिकाओं को जैन धर्म का प्रारम्भिक ज्ञान कराया जाता है साथ ही उन्हें व्यसनमुक्त एवं संस्कारयुक्त जीवन जीने की विशेष प्रेरणा दी जाती है। प्रतिवर्ष लगभग 8 से 10 हजार बालक-बालिकाएँ समता संस्कार शिविरों में भाग लेते हैं।

समता संस्कार शिविर

- **आगम, अहिंसा-समता एवं प्राकृत संस्थान, उदयपुर :** जैन विद्या अध्ययन के विकास के परिप्रेक्ष्य में यह एक प्रमुख प्रवृत्ति है। प्राकृत एवं जैन धर्म पर संस्कृति विषयक संगोष्ठियों का आयोजन, शोधलेखों का प्रकाशन, तथा ग्रंथों का अनुवाद व प्रकाशन, संस्थान के सेवा कार्यों का विशिष्ट आयाम है।

संस्थान का एक वृहत् पुस्तकालय है जिसमें जैन बौद्ध तथा वैदिक परम्परा से संदर्भित 8952 पुस्तकें एवं 1556 हस्तलिखित पाण्डुलिपियाँ संग्रहित हैं। संस्थान द्वारा प्राकृत व्याकरण, 3 शोध ग्रंथों एवं 10 प्रकीर्णक ग्रंथों का प्रकाशन किया जा चुका है। इनके अतिरिक्त मोहनलाल सुखाड़िया विश्व-विद्यालय उदयपुर के जैन विद्या एवं प्राकृत विभाग द्वारा स्वीकृत व निर्धारित पाठ्यक्रम की पुस्तकें भी संस्थान द्वारा प्रकाशित हुई हैं।

- **विहार सेवा समिति :** चारित्रात्माओं के शेखेकाल विहार के समय संघ का विशेष दायित्व बनता है कि उनकी विहार यात्रा में संघ साध्वोचित मर्यादा का पालन करते हुए सहयोगी बने। इस भावना को ध्यान में रखते हुए अपरिचित एवं दूरस्थ क्षेत्रों में विचरणरत चारित्रात्माओं के साथ जो विहारकर्मी होते हैं उनकी सेवा का दायित्व केंद्रीय संघ वहन करता है। नानेश निकेतन परिसर में विहार सेवा दल ट्रेनिंग सेन्टर की स्थापना की गई है ।

- **सेठ घेवरचंद केसरीचंद गोलछा जवाहर स्मृति व्याख्यानमाला निधि :** इस व्याख्यानमाला का उद्देश्य जैन धर्म, दर्शन एवं संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में विद्वानों के चिन्तन को जैन एवं जैनेतर वर्ग तक पहुंचाना है। अब तक संघ द्वारा 13 व्याख्यानमालाओं का आयोजन किया जा चुका है जिनमें लब्धप्रतिष्ठित विद्वानों के भाषण हुए।

साधुमार्गी प्रशासनिक प्रशिक्षण फोरम

श्री संघ उन गुणसम्पन्न प्रतिभावान विद्यार्थियों को प्रोत्साहन, समर्थन व वित्तीय सहयोग प्रदान करता है जो अखिल भारतवर्षीय सिविल सेवा (All India Civil Service), विशेषकर IAS व IPS में केरियर हेतु अभिलाषी हैं। इस उद्देश्य से श्री संघ का गुणोत्कृष्ट विद्यार्थियों का चयन करते हुए उन्हें सार्थक, सुदृढ़ नि:शुल्क अनुशिक्षण (Coaching) व मार्गदर्शन सेवा की उपलब्धिता प्रस्तावित है। ताकि इस प्रकार का प्रशिक्षण ग्रहण कर सिविल सेवाओं की चुनौतीपूर्ण व अत्यधिक स्पर्धात्मक परीक्षा में उत्तीर्ण हो सके। हम अपने होनहार विद्यार्थियों को इस सुवर्ण संघ से लाभान्वित होने के लिए आमंत्रित करते हैं।

जन सेवा एवं जीव दया प्रवृत्तियाँ

- **पूज्य आचार्य श्री श्रीलालजी उच्च शिक्षा योजना :** आपश्री की स्मृति को समर्पित यह उच्च शिक्षा योजना स्वधर्मी मेधावी व महत्वाकांक्षी विद्यार्थियों हेतु विशेषकर जो धनाभाव के कारण उच्च शैक्षणिक सुविधाओं व अवसरों से वंचित रह जाते हैं, एक वरदान स्वरूप है। इस योजना के अंतर्गत जो अब संघ की अभिनव प्रवृत्ति के रूप में आरंभ की गई है, स्नातक/स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों के लिए प्रतिभावान विद्यार्थियों को ब्याज-मुक्त अर्थ सहयोग उपलब्ध कराया जाता है । स्वदेश एवं विदेश के मान्यता प्राप्त शिक्षण केन्द्रों में प्रवेश-प्राप्ति के पश्चात् यथोचित अर्थ सहयोग प्रदत्त होता है। योजना के कार्यान्वयन व संचालन हेतु एक प्रबंधन समिति गठित हुई है। देश और विदेश में पढ़ने वाले लगभग 191 छात्र-छात्राओं को ब्याज मुक्त ऋण सहयोग दिया जा चुका है ।

उच्च शिक्षा योजना हेतु स्टेट बैंक के साथ **MOU Sign.** करते हुए **SBI** के तत्कालीन मेनेजिंग डायरेक्टर- श्री रजनीश कुमार (आप आगे चलकर **SBI** के चेयरमैन बनें।)

सर्वधर्मी सहयोग

- **समता छात्रवृत्ति योजना :** श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन महिला समिति द्वारा 12वीं कक्षा तक के होनहार विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है। इस योजना के अंतर्गत विद्यार्थी का वर्ष भर का शैक्षणिक खर्च दानदाता द्वारा वहन किया जाता है ।
- **सर्वधर्मी सहयोग :** श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन महिला समिति द्वारा संचालित इस प्रवृत्ति के अंतर्गत जरूरतमंद स्वधर्मी परिवारों को प्रतिमाह यथावश्यक अर्थ सहायता प्रदान की जा रही है।

वीर सेवा समिति

- **वीर सेवा समिति :** वीर सेवा समिति का मुख्य लक्ष्य हैं कि वीर परिवार की सेवा में संघ अपने दायित्व का निर्वहन करे। इस हेतु बिना ब्याज के ऋण सहायता भी दी जाती है।

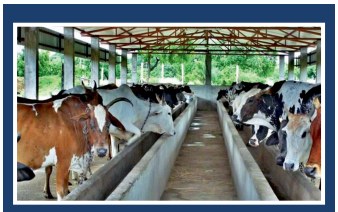

गौशाला

- **समता जनकल्याण प्रन्यास :** ऐसे सर्वधर्मी भाई बहनों को, जो असाध्य बीमारी से ग्रसित हों परन्तु चिकित्सा व्यय वहन करने में असमर्थ हों समता जन कल्याण प्रन्यास द्वारा चिकित्सा हेतु अर्थ सहयोग प्रदान किया जाता है।
- **जीव दया प्रकोष्ठ (श्री आदिनाथ पशुरक्षण संस्थान, कानोड़) :** भगवान महावीर की अमृतवाणी **'जीओ और जीने दो'** को आत्मसात् करते हुए संघ द्वारा अनेक गौशालाओं एवं जीवदया केन्द्रों को सहायता दी जाती है। कानोड़ स्थित श्री आदिनाथ पशुरक्षण संस्थान नामक गौशाला का संचालन संघ द्वारा किया जा रहा है। इस गौशाला में वर्तमान में 130 से अधिक गायें संरक्षित है ।

नानेश निकेतन, रतलाम

- **नानेश निकेतन (श्री प्रेमराज गणपतराज बोहरा धर्मपाल जैन छात्रावास) :** धर्मपाल छात्रों की शिक्षा, आवास व भोजन की यहां व्यवस्था है। अध्ययनरत छात्रों को धार्मिक शिक्षा भी प्रदान की जाती है, सामायिक आदि क्रियाकलाप प्रतिदिन निष्पन्न होते हैं।
- **श्री गणेश जैन छात्रावास :** इसकी संस्थापना शांतक्रांति के अग्रदूत स्व. आचार्य श्री गणेशलालजी म.सा. की पुण्यस्मृति में 01 अगस्त 1964 को हुई थी। छात्रावास का प्रयोजन केवल आवासीय व भोजन सुविधा उपलब्ध कराना नहीं, अपितु जैन समाज के छात्रों को सुसंस्कारित, धर्मानुरागी व व्यावहारिक दृष्टि से समुन्नत बनाना भी। अब तक हजारों छात्र इसकी सुविधाओं से लाभान्वित हो चुके हैं; उनके चरित्र निर्माण में भी छात्रावास ने अपनी भूमिका निभाई है। संप्रति निवासरत 103 छात्रों में इंजीनियर,

श्री गणेश जैन छात्रावास

सी.ए., एम.बी.ए., बी.कॉम. इत्यादि संव्यावसायिक (Professional) कोर्स के विद्यार्थियों की समाविष्टि है। छात्रावास परिसर में 200 विद्यार्थियों की क्षमता-युक्त नवीन, आधुनिक, भोजनशाला का निर्माण हुआ हैं।

- **समता बुक बैंक :** महाविद्यालय स्तरीय एवं उच्च तकनीकी शिक्षा ग्रहण करने वाले जैन छात्रों को पाठ्य पुस्तकें सहज उपलब्ध कराने हेतु समता बुक बैंक, उदयपुर की स्थापना की गई है। समता बुक बैंक से कला, वाणिज्य, विज्ञान, सी.ए., सी.एस, एम.बी.ए, एमबीबीएस, आई.टी. एवं इसी प्रकार के अन्य उच्च स्तरीय पाठ्यक्रम हेतु पुस्तकें उपलब्ध कराई जाती हैं। वर्तमान में बुक बैंक सुविधा के अंतर्गत 1850 पुस्तकें उपलब्ध है।

- **परमार्थ सेवा** : संघ द्वारा प्रतिवर्ष चिकित्सा शिविरों का आयोजन किया जाता है। विभिन्न रोग पीड़ितों का उपचार इस प्रकार के शिविरों में किया जाता है।

- **भगवान महावीर समता चिकित्सालय, डोण्डीलोहारा :** छत्तीसगढ़ के आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र में इस चिकित्सालय की स्थापना वर्ष 1999 में हुई। वर्तमान में यह चिकित्सालय वार्मर मशीन, एक्स-रे सुविधा, पैथोलॉजी लेब, प्रसूति गृह एवं ऑपरेशन थियेटर आदि से सुसज्जित है। चिकित्सालय परिसर में भोजनालय एवं जल-मंदिर का संचालन भी किया जा रहा है। हजारों व्यक्ति इस चिकित्सालय से लाभान्वित हो चुके हैं।

नानेश चिकित्सालय, रतलाम

- **नानेश चिकित्सालय, रतलाम :** संघ के चिकित्सा एवं आरोग्य प्रवृत्तियों की श्रृंखला में नानेश चिकित्सालय रतलाम एक अभिनव कड़ी है। धर्मपाल बंधुओं एवं अन्य जनों के सेवार्थ व उपचारार्थ नानेश निकेतन परिसर रतलाम में नानेश चिकित्सालय का शुभारम्भ 10 जनवरी 2016 को किया गया। चिकित्सालय में अन्य आवश्यक सुविधाएं जैसे ईसीजी (ECG), रूग्णवाहिनी (Ambulance) इत्यादि उपलब्ध करवाने हेतु संघ प्रयासरत है। यह सेवा प्रकल्प तात्कालिक सफलता व जनप्रियता हासिल कर चुका है। उपचार के साथ-साथ नि:शुल्क औषध की भी सेवा मरीजों को उपलब्ध कराई जाती है।

- **व्यसनमुक्ति एवं संस्कार जागरण :** आचार्य श्री रामेश का प्रमुख संदेश व्यसनमुक्ति आज के इस आधुनिक यग में अत्यन्त प्रासंगिक है। अब तक इस कार्यक्रम में विद्यालयों, महाविद्यालयों, कारागृहों एवं सार्वजनिक स्थलों पर भाषण, व्याख्यानमाला, प्रदर्शनी एवं रैलियों के माध्यम से लोगों को कुव्यसन त्यागने की उत्प्रेरणा देकर उन्हें व्यसनमुक्त करने का कार्य अनवरत किया जा रहा है।

व्यसनमुक्ति हेतु छात्र-छात्राओं को प्रेरित करते भाई महेशजी नाहटा

साहित्यिक प्रवृत्तियाँ

पाक्षिक पत्रिका

धार्मिक अंक

- **श्रमणोपासक :** यह हिंदी पाक्षिक संघ का मुखपत्र व प्रतिनिधिक विचार वाहिनी है जो संघ स्थापना के समकालीन विगत 59 वर्षों से अविरल प्रकाशित हो रहा है। पत्रिका में आचार्य भगवंतों के दिव्य प्रवचन व अमृतवाणी, जैन धर्म व दर्शन संदर्भित लेखन, संघ संबंधी सूचना, तथा अन्य नैतिक, मूल्य-आधारित, उत्प्रेरक व प्रेरणास्पद स्तंभ प्रस्तुतियों की समाविष्टि होती है। अपने रूचिपूर्ण चित्तरंजक विषय-वस्तु के कारण 'श्रमणोपासक' जनप्रिय तो है ही, साथ ही विवेकपूर्ण पाठक इसे समाज में जागृति व परिवर्तन के उद्दीपक के स्वरूप में आंकते हैं। वर्तमान में 'श्रमणोपासक' के 24500 से अधिक आजीवन सदस्य हैं।

पाक्षिक पत्रिका

समाचार अंक

- **साधुमार्गी पब्लिकेशन :** संघ द्वारा जैन धर्म, दर्शन, आगम, कथा एवं प्रवचन से संदर्भित साहित्य का प्रकाशन किया जाता है। सत्साहित्य का प्रकाशन संघ की महत्वपूर्ण प्रवृत्ति है। आचार्य श्री नानेश रचित अमर कृति, जिणधम्मो, समता दर्शन और व्यवहार (गुजराती, हिन्दी, मराठी, बंगाली, अंग्रेजी भाषाओं) में प्रकाशित हो चुके है। साधुमार्गी जैन संघ ने आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. के चिन्तन की अंग्रजी अनुवाद ***Nana*** के माध्यम से वैश्विक पहचान बनाई है।

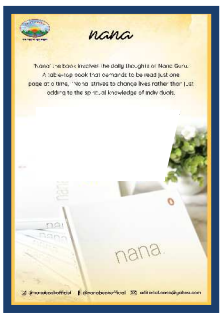

- **आगम एवं तत्व प्रकाशन समिति :** जैन आगमों में निरूपित तत्त्व ज्ञान के कंठस्थ करने तथा उन पर चिन्तन मनन अन्वेषण करने से शास्त्रों के गहन विषयों का भी सरलता से ज्ञान प्राप्त हो जाता है। संघ द्वारा जैन धर्म, दर्शन, आगम एवं प्रवचन से संदर्भित साहित्य का प्रकाशन किया जाता है। स्वाध्यायमाला, दशवैकालिक गुटका, जम्बूद्वीप (क्षेत्र लोक मंजूषा) आदि महत्वपूर्ण प्रकाशन पुस्तकाकार में उपलब्ध हैं तथा कुछ अन्य प्रकाशनाधीन हैं।

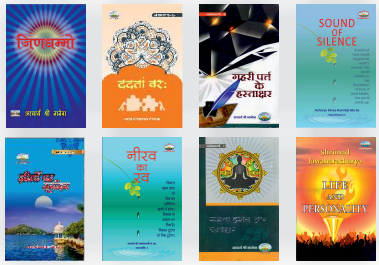

- **के एण्ड जी पब्लिकेशन :** साधुमार्गी पब्लिकेशन की एक सहायक इकाई के रूप में के एण्ड जी प्रकाशन (K & G Publication) का शुभारंभ किया गया। इसके तहत महापुरुषों के अत्यंत गहन एवं दुर्लभ विचारों को पुस्तक के माध्यम से संकलित कर पाठकों को उपलब्ध कराया करायी गयी है।

के एण्ड जी प्रकाशन की पहली किताब 7 फरवरी, 2022 को 'आई टू आई (Eye to I)' के रूप में Amazon पर लॉन्च किया गया था। 'Eye to I' एक विचारशील, परिवर्तनकारी पुस्तक है जिसमें 'आचार्य श्री रामलाल जी म.सा.' के गहनतम प्रतिबिंबों से ली गई '107 कोटेशन' शामिल हैं। जो अपने जीवन मैं सत्य और न्याय को एक मज़बूत आधार बनाना चाहते है, सही और ग़लत के बीच अंतर करने की क्षमता विकसित कर, जीवन को सरल बनाना चाहते है उनके लिए यह पुस्तक बहुत उपयोगी सिद्ध हो रही है। व्यक्तिगत खोज का एक मिश्रण, 'Eye to I' सभी आयु-वर्ग के लोगों के लिए एक अनिवार्य भोग है, जो जीवन में सरल चीजों के उत्तर खोजने में रुचि रखते हैं। लॉन्च के कुछ ही हफ्तों के भीतर ग्राहकों के उत्साह के आधार पर, प्री-ऑर्डर अवधि में ही, अविश्वसनीय रूप से और तेजी से Amazon पर Jainism और Hindu Studies श्रेणी में #1 स्थान पर Best Seller रही। यह किताब English और Hindi दोनों में उपलब्ध है और आप इसे Flipkart और Meesho के माध्यम से ऑर्डर कर सकते है है।

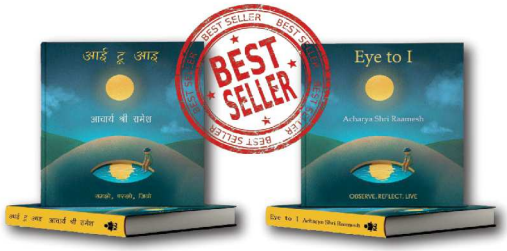

#1 Best Seller On Amazon

- **श्री गणेश जैन ज्ञान भण्डार, रतलाम :** यह अप्रतिम ज्ञान भण्डार लगभग 75000 से अधिक पुस्तकों व दुर्लभ ग्रंथों से सुसज्जित है। अनेक हस्तलिखित पाण्डुलिपियां भी यहां संग्रहित हैं। इस केंन्द्र से चारित्रात्माओं, मुमुक्षुओं व स्वाध्यायियों के ज्ञानार्जन हेतु पठन-सामग्री उपलब्ध कराने का गुरूतर कार्य संपन्न होता है। भण्डार में संग्रहित व संरक्षित सभी पुस्तकों का कम्प्यूटरीकरण हो चुका है, जिसके चलते पुस्तकों के वितरण व व्यवस्थापन का कार्य सुगम व सुनियोजित हुआ है। भण्डार का संचयन जैन समाज की अनमोल धरोहर है। इस प्रवृत्ति की प्रगति, स्वाध्याय व जैन विद्या में रूचि उजागर करने के पुनीत प्रयासों में संघ के योगदान की गौरवगाथा है।

सामाजिक विकास प्रवृत्तियाँ

- **उत्क्रान्ति :** जैन धर्म का उद्भव समाज में व्याप्त हिंसा, अनाचार, प्रदर्शन, पाखण्ड और कर्म काण्ड के निवारण हेतु एक उत्क्रान्ति के रूप में हुआ था। तथापि समय के प्रहार से और संसर्ग दोषों से, श्रेष्ठ जैन समाज में भी कतिपय सामाजिक कुरीतियों का समावेश हुआ। दहेज, वैभव,

प्रदर्शन, तपस्या में भी आडम्बर, शादी विवाह पर फिजूलखर्ची , भोंडे प्रदर्शनी आदि कुरीतियों से जैन समाज अछूता नहीं रहा। ऐसे समय में चर्तुविध संघ के नवम् नक्षत्र पूज्य आचार्य श्री रामलालजी म.सा. ने इन कुरीतियों के उन्मूलन हेतु **''उत्क्रान्ति एक संकल्प''** के रूप में आज से दो वर्ष पूर्व बैंगलोर चार्तुमास में संघ पर महती कृपा का वर्षण करते हुए एक आयाम प्रदान किया। अब तक 12425 परिवार उत्क्रांति संकल्प ले चुके हैं तथा 631 गाँव **'उत्क्रांति ग्राम'** का दर्जा पा चुके हैं।

- **धर्मपाल प्रचार-प्रसार :** समता विभूति आचार्य श्री नानालालजी म.सा. ने मालवा प्रान्त में विचरण करते हुए देखा कि वहाँ की बलाई जाति के लोग कुरीतियों से घिरे हुए थे एवं अनेक दुर्व्यसनों से ग्रसित थे। ऐसे लोगों को आचार्य भगवन ने शाकाहार, व्यसनमुक्ति एवं सुसंस्कार अपनाने हेतु विशेष उद्‌बोधन दिया। जिससे प्रभावित होकर मालवा क्षेत्र के सैंकड़ों गांवों के लाखों लोगों ने व्यसनमुक्त जीवन जीने का संकल्प लिया। इन्हें आचार्य भगवन् ने धर्मपाल के नाम से संबोधित किया। धर्मपाल के बच्चों में संस्कार निर्माण के लिए करीब 49 गाँवों में 1500 बच्चों को 12 शिक्षकों के माध्यम से उनके संस्कार निर्माण की प्रक्रिया गतिशील है।

- **गुणशील आयाम :** आचार्य भगवन् श्री रामलाल जी म.सा. की महती अनुकम्पा साल दर साल नित नूतन आयामों के आशीर्वचन में परिभाषित व परिलक्षित होती आई है। आपश्री के मुखारविंद से उद्‌घोषित आयाम आरंभ में व्यक्तिगत विकास, सामाजिक उत्थान व राष्ट्र निर्माण का संकेत–लिपि (उवश) तथा सूत्र होता है, जो आगे चलकर जनजागरण अभियान का सूत्रपात करते हुए नए सिरे से धर्मप्रभावना का प्रेरणा–स्रोत भी बनता है।

वर्तमान वर्ष का अभिनव आयाम 'गुणशील' आयामों की सुवर्ण श्रृंखला में एक अतिरिक्त कड़ी होने के अलावा अपनी एक विलग पहचान, एक विशिष्ट महत्व भी रखता है। प्रथम, आचार्य श्री नानेश के जन्म शताब्दी दिवस पर व्याख्यायित **'गुणशील'** संकल्प व समाज में उस दिव्य संत के अमृत वाणी की भी अनुगूंज है। दूसरा, राष्ट्र पुननिर्माण का पुनीत कार्य, जो **'गुणशील'** के संदेश में आह्‌वानित है, वर्तमान परिप्रेक्ष्य में एक तात्कालिकता, एक अविलंबिता धारण किए हुए हैं।

'गुणशील' आयाम की व्याख्या करते हुए आचार्य प्रवर ने फरमाया कि जो अपने गुणों के सौरभ से चरित्र की महक से अपने जीवन को सुगंधमय, सुशोभित करता है वह गुणशील है। हम स्वयं सदाचारी बने व अन्यों को भी इस दिशा में उत्प्रेरित करें, तभी राष्ट्र सदाचारी बनेगा। हमें अपने पुरुषार्थ, अपने सामर्थ्य की शक्ति को जागृत करना है। 21 सूत्रीय **'गुणशील'** संकल्प नियमावली का सारतत्त्व है राष्ट्र जीवन में सदाचार व नैतिकता का संचार। यही राष्ट्रीय पुनर्निर्माण की आधारशिला है। हम आशान्वित हैं कि राष्ट्रीय चेतना से ओत–प्रोत सभी व्यक्तिगत नागरिक तथा संस्थाओं में कार्यरत अधिकारी वर्ग व कर्मचारीगण **'गुणशील'** संकल्प अभियान से जुड़ेंगे। **'गुणशील'** संकल्प आत्मिक विकास, वैयक्तिक उन्नति, सामाजिक अभ्युदय व राष्ट्रीय उत्कर्ष का महामार्ग है। उसमें नए युग–प्रवर्तन की क्षमता भी अंतर्निहित है।

● **समता सर्व मंगल :** भारतीय परंपरा में मंगलाचरण की महत्ता व सार्थकता को जीवन में सुख, उमंग, उत्साह एवं शांति से जोडते हुए युगनिर्माता आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. ने दिनांक **8 अक्टूबर 2021 (संघ स्थापना दिवस)** पर ब्यावर की वसुंधरा **समता सर्व मंगल** के रूप में अभिनव आयाम प्रदत्त किया। इस आयाम का **शुभारंभ दिनांक 1 जनवरी 2022** को मुख्य अतिथि श्री अरविन्द कुमार जी जैन (आई आई एस, जॉइंट डायरेक्टर – मीडिया एंड कम्युनिकेशन, प्रधानमंत्री कार्यालय, नयी दिल्ली) द्वारा ऑनलाइन ज़ूम एप के माध्यम से हुआ।

व्यक्ति के जीवन का अधिकाधिक समय व्यावसायिक कार्यों में व्यतीत होता है, अत अपने–अपने व्यवसायिक कार्य प्रारंभ करने से पूर्व में किया गया, समता सर्व मंगल सभी मनुष्यों एवं व्यवसायिक प्रतिष्ठानों के सम्पूर्ण वातावरण में एक भव्य मंगल की संरचना करता है, जिससे सम्पूर्ण सृष्टि में अपूर्व सुख का प्रसार होता है। समता सर्व मंगल में किए जाने वाले संगान का क्रम इस प्रकार है –

- **नवकार महामंत्र –** नवकार महामंत्र किसी भी व्यक्ति, जाति, समाज एवं घर्म से जुड़े लोगों को गुणों से परिपूर्ण आत्माओं की शक्ति व तेज प्रदान करने वाला है। यह हमारे जीवन को सुखमय सुरक्षा प्रदान करता है।
- **''होवे धर्म प्रचार'' एवं ''मेरी भावना'' –** ''होवे धर्म प्रचार'' एवं ''मेरी भावना'' के शब्द जीवन में नैतिकता, ईमानदारी, सहिष्णुता, समता आदि सद्गुणों को विकसित करने वाले हैं।
- **प्रतिदिन के लिए छोटे-छोटे नियम –** प्रतिदिन की एक प्रतिज्ञा हमारे भीतर आत्मविश्वास की वृद्धि करती है एवं स्वयं के नियंत्रण की शक्ति प्रकट होती है।
- **मांगलिक पाठ –** मंगलपाठ हमें जगत के सर्वोत्तम मंगलमय आत्माओं से जोडता है एवं अपने जीवन को सभी महापुरूषों की ऊर्जा से सुरक्षित, आनंदित एवं प्रसन्नचित्त कराता है।

यह आयाम केवल साधुमार्गी सम्प्रदाय तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इससे प्रत्येक वर्ग, प्रत्येक व्यक्ति को जोड़ने का प्रयास है। समाज के प्रत्येक वर्ग की समता सर्व मंगल की आराधना करते हुए जीवन की विकास यात्रा उन्नत हो, मंगलमय हो ऐसी भावना से आचार्य भगवन द्वारा इस आयाम का आव्हान किया गया है। सार यह है कि समता सर्व मंगल का संगान मालिक से लेकर चौकीदार तक हर व्यक्ति अपने प्रतिष्ठान, संस्थान, कार्यालय, दुकान, कारखाना, उद्योग में करें ताकि वहाँ का सम्पूर्ण वातावरण एवं जन–जन एक मंगल स्वरूप का वरण करें।

महामन्त्रो नमस्कारः, काव्यं सद्गुणवर्धकमब।
प्रतिज्ञा मङ्गलं पाठः, समता सर्व मङ्गलमब।।

हिन्दी, अंग्रेजी, कन्नड़, तमिल, तेलगू, गुजराती, बंगाली मराठी, उड़िया, आसामी और पंजाबी भाषाओं में समता सर्व मंगल पुस्तिका का प्रकाशन होगा।

संघ सदस्यता, सहयोग एवं समृद्धि प्रवृत्तियाँ

राम चमकते भानु समाज

- **इदं न मम (यह मेरा नहीं है) :** श्री अ.भा.सा. जैन संघ की विभिन्न प्रवृत्तियों के सुचारू संचालन हेतु एक अभिनव प्रतिबद्धता की मिसाल एवं अर्थ सौजन्य का माध्यम प्रस्तावित हुआ है। दानदाताओं ने अपनी आय का निर्धारित भाग आजीवन नियमित रूप से संघ को समर्पित करने का संकल्प लिया है। इस समर्पण भाव की अभिव्यक्ति को **''इदं न मम''** (यह मेरा नहीं है) के रूप में साकार किया गया है। वर्तमान में इस प्रवृत्ति में 2208 सदस्य है।

इदं न मम
(यह मेरा नहीं है)

- **दानपेटी योजना :** संघ की समस्त प्रवृत्तियों में लोगों की सहभागिता सुलभ हो इस हेतु संघ द्वारा दानपेटी योजना का शुभारम्भ किया गया । संघनिष्ठ परिवारों ने दानपेटी अपने यहाँ लगा रखी है, जिसमें वो प्रतिदिन अपना अंशदान संघ विकास के लिए जमा करते है।
- **विहार सेवा संयोजन सदस्यता :** विहार सेवा चतुर्विध संघ में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। चारित्रात्माओं के विहार आदि संयोजन के लिए इसकी सदस्यता के अन्तर्गत 1 लाख रुपये का दान दिया जाता है। इस राशि का उपयोग विहारकर्मी भाईयों के मासिक वेतन एवं अन्य खर्च के लिए किया जाता है।
- **संघ सदस्यता अभियान :** संघ प्रभावक, महाप्रभावक एवं शिखर सदस्यता अभियान के साथ ही संघ के आजीवन सदस्य, साहित्य सदस्य एवं श्रमणोपासक सदस्य आदि में उत्तरोत्तर अभिवृद्धि हो रही है।
- **समता भवन निर्माण :** श्रावक–श्राविकाएँ धर्माराधना हेतु अपने गाँव/नगर में समता भवनों का निर्माण करवाते हैं। सम्पूर्ण देश में कई स्थलों पर समता भवन निर्मित हैं जहाँ नियमित धर्माराधना होती है एवं संघ संगठन की विभिन्न गतिविधियाँ संचालित होती है।

समता भवन निर्माण

- **भगवान महावीर समता संस्कार पाठशाला सदस्यता :** आज के युग में बालक बालिकाओं के भीतर व्यवहारिक शिक्षा के साथ–साथ धार्मिक शिक्षा एवं सद्संस्कारों का बीजारोपण हो, इस हेतु स्थानीय संघों के माध्यम से भगवान महावीर समता संस्कार पाठशालाओं का संचालन सम्पूर्ण देश में किया जा रहा है। इन पाठशालाओं में इस योजना के अन्तर्गत हजारों बच्चे नैतिकता, सदाचार, शाकाहार, जैन धर्म, तत्व, दर्शन का बोध प्राप्त रहे हैं।
- **समता मिति :** दानदाताओं द्वारा दिया जाने वाला दान अन्य लोगों के लिए संबल–सहारा बने, श्री प्रेमराज गणपतराजी बोहरा धर्मपाल जैन छात्रावास में समता मिति योजना से एक मंगल शुरूआत की गई। इस योजना में एक मुश्त, एक ही बार 5000/– रुपया जमा करवाना होता है। इस योजना में पुण्यतिथि/जन्म तिथि/दीक्षा तिथि/तपस्या तिथि/महापुरूषों से सम्बंधित तिथि तथा अन्य विशेष तिथियों पर राशि दी जाती है।

विविध पुरस्कार

संघ द्वारा शिक्षा, सेवा एवं प्रतिभा उन्नयन के क्षेत्र में विविध पुरस्कार दिये जाते हैं–

- **आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार :** आचार्य श्री नानेश की पुण्य स्मृति में इस पुरस्कार की स्थापना की गई। यह पुरस्कार सम्प्रदाय निरपेक्ष दृष्टि से ऐसे व्यक्ति को दिया जाता है जिसने अपने जीवन में समता दर्शन व्यवहार को आत्मसात कर रखा हो। अब तक 8 समता मनीषियों को इस पुरस्कार के अन्तर्गत सम्मानित किया जा चुका है।

आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार (सन् 2015)
सुश्रावक श्री उमरावजी बम्ब, टोंक (Advocate)

आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार (सन् 2018)
श्री ओमप्रकाशजी माथुर (राज्यसभा सांसद व रा. उपाध्यक्ष भाजपा)

- **आचार्य श्री नानेश जन सेवा पुरस्कार :** यह पुरस्कार उस व्यक्ति अथवा संस्था को दिया जाता है जिसने सार्वजनिक सेवा के किसी भी क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करते हुए नये कीर्तिमान स्थापित किये हों।

आचार्य श्री नानेश जन सेवा पुरस्कार (सन् 2016)
भारतीय जैन संघटना (प्रतिनिधि- श्री शांतिलाल जी मूथा)

आचार्य श्री नानेश जन सेवा पुरस्कार (सन् 2018)
सेवा भारती A Unit of RSS (प्रतिनिध-श्री राकेश जी जैन)

- **स्व. श्री प्रदीप कुमार रामपुरिया स्मृति साहित्य पुरस्कार :** यह पुरस्कार उस व्यक्ति अथवा संस्था को दिया जाता है जिसने सार्वजनिक सेवा के किसी भी क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करते हुए नये कीर्तिमान स्थापित किये हों।

स्व. श्री प्रदीप कुमार रामपुरिया स्मृति साहित्य पुरस्कार (सन् 2017)
डॉ. सुरेखा जी मोगरा

स्व. श्री प्रदीप कुमार रामपुरिया स्मृति साहित्य पुरस्कार (सन् 2018)
डॉ. धर्मचंद जी जैन

- **सेठ श्री चम्पालालजी सांड स्मृति उच्च प्रशासनिक पुरस्कार :** भारतीय प्रशासनिक सेवा में उत्कृष्ट कार्य करने वाले जैन मतावलम्बी को यह पुरस्कार दिया जाता है।

स्व. श्री चम्पालाल सांड स्मृति उच्च प्रशासनिक पुरस्कार (सन् 2018)
श्री महावीर जी सिंघवी (आइ.एफ.एस)

स्व. श्री चम्पालाल सांड स्मृति उच्च प्रशासनिक पुरस्कार (सन् 2019)
श्री सुदीप जी जैन (आइ.ए.एस)

अंतराष्ट्रीय शाखाएँ

न्यूयार्क (यू.एस.ए.)

- **अंतराष्ट्रीय शाखाएँ :** श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ की शाखाएँ केवल भारत में ही नहीं अपितु विदेश में भी कार्यरत है।

संघ प्रभावना समुद्रपार भी आरंभ हो चुकी है, विशेषकर उन देशों में जहां साधुमार्गी परिवार निवासरत हैं । उदाहरणतया, एक नई शाखा "साधुमार्गी जैन संघ मिडल ईस्ट" दुबई में स्थापित हुई । शाखा का कार्यक्षेत्र दुबई, अबू ढाबी, कुवैत, सऊदी अरब, ईरान व ईराक रहेगा ।साधुमार्गी जैन संघ व महिला समिति यू.एस.ए. में गठित हो चुके हैं। काठमांडू संघ एवं महिला समिति नेपाल में कार्यरत हैं।

संघ के अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बढ़ते कदम । श्री साधुमार्गी जैन संघ मिडल ईस्ट, श्री साधुमार्गी जैन संघ (यू.एस.ए.), श्री साधुमार्गी जैन संघ नेपाल

दुबई (यू.ए.ई.) काठमांडू (नेपाल)

साल्ट लेक सिटी उताहा (यू.एस.ए.)

श्रीमती एकता देवड़ा, अहमदाबाद ने अमेरिका में स्थित सॉल्टलेक सिटी में आयोजित विश्व धर्म सम्मेलन में **स्ट्रेस मैनेजमेन्ट बॉय आचार्य श्री नानेश** पर प्रस्तुतिकरण कर संघ को गौरवान्वित किया ।

अन्तर्गत सहयोगी शाखाएँ एवं संस्थाएँ

श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति

श्री संघ की यह अंतर्गत संस्था अपने गरिमामय, उपलब्धियों के परिपूर्ण कीर्तिमानों से विभूषित प्रवास तय करते हुए अने 55 वर्षों की यात्रा पूर्ण कर चुकी है। चौदह हजार से अधिक सक्रिय, सेवाभावी, ऊर्जावान महिला संस्थाओं की इस संघटना ने अनेकों बहुविध क्रियाकलापों, अभियानों एवं आंदोलनों से धर्मप्रभावना को नित नवीकृत गतिशीलता व अभिनव दिशाबोध प्रदान किया। वर्तमान में महिला चेतना में जागृति, सर्वधर्मी सहायता, समता छात्रवृत्ति योजना, महिला सशक्तिकरण, शुभश्री वृद्धि योजना, परिवारांजलि, युवति शक्ति, Womens Motivational Fourms केसरिया कार्यशाला, संगठन, आत्म-निर्भरता व स्वाभिमान हेतु सलाई मशीन प्रदान करना, समता पापड़ उद्योग (समता सेवा सोसायटी) एवं अन्य योजनाएँ महिला समिति के द्वारा गतिमान है। दहेज प्रथा, नारी प्रताड़ना, बाल-विवाह, भ्रूण हत्या इत्यादि के उन्मूलन हेतु संघर्ष समिति के प्रयासों के मुख्य बिंदु रहे हैं।

श्री अ.भा.सा. समता युवा संघ

तेरे पावन चरणों में

युवा सदस्य सभा में भाग लेते हुए

किसी भी संघ के चहुँमुखी विकास में युवा वर्ग का विशेष योगदान रहता है। युवा वर्ग धर्म से जुड़े, उन्हें सही दिशा बोध कराया जाए, एवं नयी सोच उनमें विकसित हो इस उद्देश्य से आचार्य श्री नानेश के अजमेर चातुर्मास के दौरान दिनांक 4 नवम्बर 1979 को श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ की स्थापना श्री हंसराज जी सुखलेचा के नेतृत्व में बीकानेर में की गई। अल्पकाल में ही युवाओं के इस संगठन ने संघ ने विशिष्ठ पहचान बनाई तथा इसके हजारों कार्यकर्ताओं ने देश के कोने-कोने में पूज्य गुरुदेव के दिव्य संदेश व्यसनमुक्ति एवं संस्कार क्रांति का शंखनाद कर एक नवीन क्रांति उत्पन्न कर दी। युवा संघ द्वारा अपने सदस्यों के मध्य सतत् संवाद स्थापित करने के उद्देश्य से समता युवा संदेश पत्रिका का प्रकाशन किया जाता है। देश-विदेश के कोने-कोने में निवासरत युवा शक्ति की सहभागिता से धार्मिक सामाजिक व विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करते हुए स्व-पर कल्याण की साधना के साथ युवाओं को दिशाबोध देने का प्रयास करना युवा संघ का उद्देश्य रहा है। आज युवा संघ व्यसनमुक्ति, उत्क्रान्ति, समता शाखा, धार्मिक गतिविधियां, सामाजिक प्रकल्प प्रतिदिन के प्रत्याख्यान, विभिन्न शिविर, ज्ञान वर्धक प्रतियोगिताएं, समता कैलेंडर एवं तरुण शक्ति आदि विभिन्न प्रवृत्तियों एवं गतिविधियों के माध्यम से निरन्तर संघ विकास में योगदान दे रहा है।

समता महिला सेवा केन्द्र (समता सेवा सोसायटी)

विगत तीन दशकों से इस सेवा केंद्र के तत्वावधान में अनेकों महिलाओं को रोजगार उपलब्ध कराकर विभिन्न प्रकार/आकार के पापड़ तथा भिन्न भिन्न मसालों का उत्पादन किया जाता है। उत्पाद की गुणवत्ता व शुद्धता क्रेताओं व ग्राहकों द्वारा मान्य व अभिस्वीकृत है। जरूरतमंद महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने हेतु एवं उन्हें आर्थिक रूप से स्वतंत्र करने की दिशा में एक ठोस चरण स्वरूप यह प्रकल्प आरंभ हुआ था। महिलाओं को विविध व्यवसायों में रोजगारोन्मुख प्रशिक्षण देकर उन्हें स्वावलंबी होने की, व सम्मानपूर्वक जीवन जीने की, उत्प्रेरणा प्रदान की जाती है।

सेवा केंद्र के व्यवसाय में वृद्धि हेतु व उत्पाद के विविधिकरण हेतु सारभूत व सुनियोजित उपक्रम प्रस्तावित हैं तथा विपणन (Marketing) हेतु क्षेत्रवार Dealer/Retailer की नियुक्ति भी विचाराधीन है।

साधुमार्गी संव्यावसायिक मंच (SADHUMARGI PROFESSIONAL FORUM (SPF))

राम चमकते भानु समाना

अपने नीतिवाक्य **'संयोजन से समुन्नति'** "Connect To Develop" का अनुवर्तन करते हुए संघ ने एक यंत्र, एक प्रणाली संस्थापित की है, जो साधुमार्गी संव्यावसायिकों व बौद्धिक वर्ग हेतु एक ऐसा मंच प्रदान करता है जहाँ वे समागम करें, विचारों का आदान प्रदान करें, परस्पर तालमेल बनाते हुए अपना नेटवर्किंग (networking) सुदृढ़ करें एवं गुरुभगवंतो का सान्निध्य पाकर आध्यात्मिक अभिवृद्धि करें।

साधुमार्गी प्रोफेशनल फोरम

एतद्वारा उन्हें नैयक्तिक एवं संव्यावसायिक एवं आध्यात्मिक विकास हेतु सुअवसर उपलब्ध होगा। अब तक एक हजार से अधिक संव्यावसायिक–डाक्टर, इंजीनियर, चार्टेर्ड अकाउन्टंट, शिक्षाविद, उच्च प्रशासनिक अधिकारी इत्यादि–इस मंच से जुड़ चुके हैं, तथा ऑनलाइन (online) बैठकों में भाग लेते हैं। संघ अपने इस बौद्धिक वर्ग को अपना सामूहिक सामाजिक पूंजी की दृष्टि से देखता है।

अनन्य महोत्सव-2020

परम पूज्य आचार्य भगवन ने अपने गुरु की महिमा एवं उनके प्रति समर्पणा को ज्ञान–दर्शन–चारित्र एवं तप के माध्यम से जन–जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से आचार्य श्री नानेश के जन्म शताब्दी वर्ष का मनाने के लिए कई अनन्य आयाम प्रदान करते हुए इसे अनन्य महोत्सव 2020 के नाम से अलंकृत किया। जिसमें आगम भक्ति, श्रुत आराधक व परिवारांजलि जैसे अनेक अनन्य आयामों से जुड़कर श्रावक–श्राविकाओं ने आचार्य श्री नानेश के प्रति अपनी भक्ति एवं समर्पणा का अनूठा परिचय दिया जो जन–मानस के पटल पर स्वर्णिम अक्षरों में अंकित है। जिसमें आगम भक्ति में 11385 श्रावक–श्राविका, श्रुत आराधक में 700 से अधिक श्रावक–श्राविका तथा परिवारांजलि में 10000 से अधिक परिवारों ने अंजलियां गंहण की, जो आज भी अनवरत जारी है।

अनन्य प्रवास यात्रा

आचार्य श्री नानेश के 100वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में पूरे देश भर में अनन्य प्रवास यात्रा की गई जो 5 जून 2019 से प्रारंभ होकर 17 मार्च 2020 तक कुल 286 दिनों तक चली। इस दरम्यान 12 अंचलों में 18 राज्यों के कुल 347 क्षेत्रों में प्रवास यात्रा संपन्न हुई। धर्म प्रभावना करते हुए विभिन्न सामाजिक एवं धार्मिक आयामों से संघ के प्रत्येक सदस्य को जोड़ने का प्रयास किया गया।

आचार विशुद्धि महोत्सव

आचार क्रांति के पुरोधा आचार्य श्री हुक्मी चन्द जी म.सा. के द्वि–शताब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में (मिगसर सुदी 2, विक्रम संवत 2079, दिनांक 25 नवम्बर, 2022 तक) आचार्य भगवन् श्री रामलाल जी म.सा. द्वारा दिनांक 22 फरवरी, 2021 को लोहावट में प्रदत्त 20 सूत्रीय ज्ञान भक्ति, तप भक्ति एवं साधना, साधना भक्ति आयाम प्रदत्त किए गए।

NET WORKING

- **साधुमार्गी जनगणना :** साधुमार्गी जैन संघ के देशव्यापी परिवार में परस्पर सम्पर्क किया जा सके, उनके बालक–बालिकाओं की शिक्षा एवं प्रतिभा से सभी अवगत हो सकें, इस हेतु प्रयास जारी है।

- **साधुमार्गी एप :** एप्प द्वारा श्रमणोपासक, साहित्य, पाठशाला शिविर, विहिरचर्या, युवा संघ, महिला समिति की गतिविधियाँ आदि सहज ही पढ़ सकते हं।
  साधुमार्गी एप्प किसी भी एंड्रोइड फोन या एप्पल फोन के प्ले स्टोर पर जाकर साधुमार्गी लिखकर डाउनलोड कर सकते हैं।

- **साधुमार्गी ग्लोबल कार्ड :** जनगणना आधारित ग्लोबल कार्ड के डेटा अपडेट किये गये। इसके आधार पर संघ द्वारा संचालित विभिन्न गतिविधियों में उपयोग किये जाने वाले अलग–अलग डेटा वेस का केन्द्रीकरण करने का कार्य किया जा रहा है जिसमें कि सभी गतिविधियां एक डेटा वेस के द्वारा संचालित की जा सके। इस तरह हमारा लक्ष्य है कि संघ के प्रत्येक सदस्य की हरेक जानकारी एक.आई.डी. नम्बर से जुड़ जाये। सदस्यगण अपने एम.आई.डी. नं. देकर विभिन्न प्रवृत्तियों के बारे में संघ सम्बन्धित अपनी सभी जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

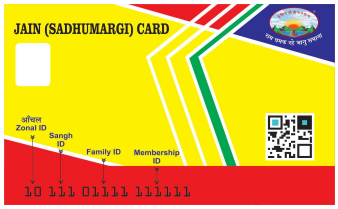

सूचना प्रौद्योगिकी अनुभाग (IT Cell)

सूचना प्रौद्योगिकी किसी भी संस्था के साफल्य–सिद्धि का मुख्य आधार है। संघ के प्रशासनिक कार्यों में गतिशीलता व शीघ्रता उत्पन्न करने हेतु संघ का **IT Cell** गठित किया गया।

महत्तम महोत्सव

रत्नत्रय के महान आराघक, श्रुत आराघक, श्रुत पारंग, उत्क्रांति प्रदाता, गुणाशील संप्रेरक, जन–जन की आस्था के केन्द्र बिंदु **परम पूज्य आचार्य भगवन 1008 श्री रामलाल जी म. सा. का संयम जीवन क्रिया की सख्ती–आचार की विशुद्धि–दृढ निर्णय क्षमता एवं अनुशासन का प्रतिबिंब रहा है। ऐसे परम प्रतापी, युग पुरूष का संयम जीवन अपने स्वर्णिम पड़ाव याने 50 वर्ष पूर्ण करने की ओर अग्रसर हो रहा है** इस सुअवसर को श्री अ.भा.सा. जैन संघ अद्वितीय घार्मिक उल्लास के साथ **''आचार्य श्री रामेश सुवर्ण दीक्षा महामहोत्सव''** के रूप में **''महत्तम महोत्सव''** मनाने जा रहा है।

जिसका आगाज **दिनांक 17 मार्च 2022 को गंगाशहर–भीनासर** में हुआ, और **दिनांक 13 जुलाई 2022 (आषाढ़ी पूर्णिमा वि.सं.2079)** से यह अनुपम **'महत्तम महोत्सव'** प्रारंभ हो चुका है और फरवरी 2025 तक चरणबद्ध रूप में मनाया जायेगा। इसी क्रम में दिनांक 13 जुलाई 2022 को देशभर में सभी स्थानीय संघों में महत्तम महोत्सव के शुभारम्भ बैनर की एक साथ लॉचिंग हुई।

महापुरूषों की वाणी शक्ति संपन्न होती है। उनके वचनों में जीवन परिवर्तन के गहरे संकेत छुपे होते हैं, संघ ने इसी घ्येय वाक्य को घ्यान में रखते हुए ''महत्तम महोत्सव'' के प्रकल्पों को **9 विभागों** में तैयार किया है। इन 9 विभागों को माघ्यम बनाते हुए हम आचार्य श्री रामेश के चिंतनों को जन–जन तक पहुंचा कर उन्हें इनसे जोड़ते हुए सभी के जीवन परिवर्तन में सहायक बनें।

यह महोत्सव एक भव्य, अनुपम, अद्वितीय व अविस्मरणीय हो, जो युगनिर्माता, युगप्रणेता आचार्य श्री रामेश के प्रेरणास्पद जीवन व अजर–अमर कृतियों के अनुरूप होते हुए सकल जैन समाज की ओर से उनके प्रति ज्ञान–तप–आराधना रूपी आहुति के रूप में समर्पित हो।

महत्तम महोत्सव से जन जन को जोड़ने हेतु **प्रत्येक 10 परिवारों पर एक प्रतिनिधि** की नियुक्त करते हुए ना सिर्फ साधुमार्गी संघ अपितु **सकल जैन समाज** तक पहुंचाना है । इस महोत्सव से हमें स्वेच्छा से, मन से जुड़ना है और हृदय से जुड़ना है, अपने जीवन को निर्मल बनाने के लिए जुड़ना है, गुरु चरण मे भेट अर्पण करने के लिए जुड़ना है ,महत्तम महोत्सव को मेरा महोत्सव बनाने के लिए जुड़ना है।

विविध आवेदन प्रपत्र

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ की विविध प्रकार की सदस्यता, विविध प्रवृत्तियों में अनुदान संबंधी एवं अन्य सहायता हेतु निर्धारित प्रपत्रों का विवरण निम्नानुसार है, इन प्रपत्रों को संघ की वेबसाईट (www.sadhumargi.com) से सीधा डाउनलोड किया जा सकता है या केन्द्रीय कार्यालय से प्राप्त किया जा सकता है।

1. संघ शिखर सदस्यता
2. संघ सदस्यता
   - महाप्रभावक सदस्यता
   - प्रभावक सदस्यता
   - आजीवन सदस्यता
   - साधारण सदस्यता
3. भगवान महावीर समता संस्कार सदस्यता
4. विहार सेवा संयोजन सदस्यता
5. श्रमणोपासक आजीवन सदस्यता
6. साहित्य आजीवन सदस्यता
7. समता जनकल्याण प्रन्यास (चिकित्सा सहायता हेतु)
8. समता छात्रवृत्ति सहयोग
9. आचार्य श्री श्रीलालजी उच्च शिक्षा योजना
10. समता मिति सहयोग
11. दानपेटी योजना
12. इदं न मम (यह मेरा नहीं है) कोष
13. समता प्रचार संघ (स्वाध्यायी गुणवत्ता विकास)
14. समता संस्कार शिविर
15. समता संस्कार पाठशाला
16. समता बुक बैंक
17. जैन संस्कार पाठ्यक्रम
18. श्री धार्मिक परीक्षा बोर्ड
19. श्री गणेश जैन छात्रावास, उदयपुर
20. नानेश निकेतन, रतलाम
    - पी.जी. बोहरा धर्मपाल जैन छात्रावास, रतलाम
    - आचार्य श्री नानेश चिकित्सालय, रतलाम
21. परिवारांजलि
22. उत्क्रांति
23. गुणशील
24. सर्वधर्मी सहयोग
25. वीर सेवा
26. आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार
27. आचार्य श्री नानेश जनसेवा पुरस्कार
28. स्व. श्री प्रदीपकुमार रामपुरिया स्मृति साहित्य पुरस्कार
29. सेठ चम्पालाल सांड स्मृति उच्च प्रशासनिक सेवा पुरस्कार

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

राम चमकते भानु समाना

संघ स्थापना - विक्रम संवत् 2019 आश्विन शुक्ला 2

संघ का उद्देश्य- सम्यक् ज्ञान, दर्शन और चारित्र की अभिवृद्धि तथा सर्वांगीण समाजोन्नति

संघ द्वारा संचालित विभिन्न प्रवृत्तियां

शैक्षणिक, आध्यात्मिक एंव धार्मिक प्रवृत्तियाँ

- समता संस्कार पाठशाला
- समता प्रचार संघ
- आचार्य श्री नानेश ध्यान केन्द्र, उदयपुर
- आगम, अहिंसा–समता एवं प्राकृत संस्थान, उदयपुर
- धार्मिक परीक्षा बोर्ड
- जैन संस्कार पाठ्यक्रम परीक्षा
- समता संस्कार शिविर
- विहार सेवा
- सेठ घेवरचंद केशरीचंद गोलछा जवाहर स्मृति व्याख्यानमाला

सामाजिक विकास प्रवृत्तियाँ

- धर्मपाल प्रचार प्रसार
- उत्क्रांति
- गुणशील
- समता सर्व मंगल

साहित्यक प्रवृत्तियाँ

- श्रमणोपासक
- साधुमार्गी पब्लिकेशन
- आगम एवं तत्व प्रकाशन
- श्री गणेश जैन ज्ञान भण्डार, रतलाम
- के एण्ड जी पब्लिकेशन

पुरस्कार प्रवृत्तियां

- आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार
- आचार्य श्री नानेश जनसेवा पुरस्कार
- स्व. श्री प्रदीप कुमार रामपुरिया स्मृति साहित्य पुरस्कार
- सेठ चम्पालाल सांड स्मृति उच्च प्रशासनिक सेवा पुरस्कार

जनसेवा एवं जीव दया प्रवृत्तियाँ

- आचार्य श्री श्रीलाल उच्चशिक्षा योजना
- साधुमार्गी एडमिनिस्ट्रेटिव ट्रेनिंग फोरम (SATF)
- समता छात्रवृत्ति योजना
- सर्वधर्मी सहायता
- वीर सेवा समिति
- समता जनकल्याण प्रन्यास
- जीव दया प्रकोष्ठ
  (श्री आदिनाथ पशु रक्षण संस्थान, कानोड़)
- नानेश निकेतन
  श्री प्रेमराज गणपतराज बोहरा धर्मपाल जैन छात्रावास
  नानेश चिकित्सालय, रतलाम
- समता बुक बैंक, उदयपुर
- भगवान महावीर समता चिकित्सालय, डोंडीलोहरा
- श्री गणेश जैन छात्रावास, उदयपुर

संघ सदस्यता, सहयोग एवं समृद्धि प्रवृत्तियां

- इदं न मम (यह मेरा नहीं)
- संघ प्रभावक, महाप्रभावक एवं शिखर सदस्यता
- संघ सदस्यता (साधारण/आजीवन)
- दानपेटी योजना
- विहार सेवा संयोजन सदस्यता
- श्रमणोपासक सदस्यता
- साहित्य सदस्यता
- समता भवन निर्माण
- भगवान महावीर समता संस्कार पाठशाला सदस्यता
- समता मिति
- साधुमार्गी प्रोफेशनल फोरम (SPF)

अन्तर्गत सहयोगी शाखाएँ एवं संस्थाएँ

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन महिला समिति **श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन समता युवा संघ**

समता सेवा सोसायटी (समता महिला सेवा केन्द्र, रतलाम)

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ एवं अन्तर्गत सहयोगी शाखाएँ एवं संस्थाओं के कार्यालय के पते व सम्पर्क सूत्र

श्री अ.भा.सा. जैन संघ
केन्द्रीय कार्यालय –
समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,
गंगाशहर, नोखा रोड़, बीकानेर–334001 (राज.)
☎ 0151–2270261, 2620359
E-mail : ho@sadhumargi.com

आचार्य श्री नानेश ध्यान केन्द्र
धार्मिक एवं शैक्षणिक केन्द्र
राणाप्रताप नगर, पद्मिनी मार्ग, उदयपुर (राज.)
मो. 723183308
E-mail : asndkudaipur2018@gmail.com

श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति
प्रधान कार्यालय –
समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग
गंगाशहर, नोखा रोड़, बीकानेर–334001 (राज.)
मो. 7231033008
E-mail : samitimahila67@gmail.com

श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ
प्रशासनिक कार्यालय –
समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,
गंगाशहर, नोखा रोड़, बीकानेर–334001 (राज.)
मो. 7073238777
E-mail : samtabhawan21@gmail.com

नानेश निकेतन
(प्रेमराज गणपतराज बोहरा, धर्मपाल जैन छात्रावास)
दिलीप नगर, रतलाम–457001 (म.प्र.)
M. 9691005551
E-mail : absjsnaneshniketan@gmail.com

समता सेवा सोसायटी
(समता महिला सेवा केन्द्र)
धनजी बाई का नोहरा, रतलाम–457001 (म.प्र.)
M. 9407326400
E-mail : samtasevasociety@gmail.com

राम चमकते भानु समाना

PROSPECTUS

संघ विवरणिका

संघ समर्पणा महोत्सव

2022

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

केन्द्रीय कार्यालय : 'समता भवन' आचार्य श्री नानेश मार्ग, गंगाशहर, नोखा रोड, बीकानेर-334401 (राज.)
E-mail: ho@sadhumargi.com, Visit us: www.sadhumargi.com sadhumargi